प्रातः क्लास 28-10-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। बाप ने बच्चों को समझाया है कियह पाठशाला है, यहपढ़ाई है ना। इस पढ़ाई से यह पद प्राप्त होता है। इनको स्कूल वा युनिवर्सिटी समझना चाहिए। यहां दूर2 से पढ़ने लिये आते हैं। क्या पढ़ने आते हैं। यह एमआबजेक्ट बुध में हैं। हम पढ़ाई पढ़ने लिये आते हैं। पढ़ाने वाले को कहा जाता है भगवानुवाच। यह है गीता। दूसरा कोई बात नहीं हैं। गीता पढ़ाने वाले का पुस्तक हैं। परन्तु पुस्तक कोई पढ़ते नहीं हैं। गीत कोई हाथ में नहीं हैं। यहां कोई भी साधु सन्त महात्मा विद्वान आदि नहीं पढ़ाते हैं। यह भी कहते हैं मैं बहुत शास्त्र आदि पढ़ा हुआ हूं। तुमको मैं नहीं पढ़ाता हूं। यह तो भगवानुवाच है। मनुष्य को भगवान नहीं कहा जा सकता। भगवान ऊंच ते ऊंच एक है। यह तो भी सारी युनिवर्टी है, मूल वतन, सूक्ष्मवतन में नहीं चल है। यहां ही चलता है। 84 का चक्र भी यहां ही हैं। इनको ही कहा जाता84 का चक्र का नाटक। यह बना बनाया खेल है। बड़ी समझने की बातें हैं। क्योंकि ऊंच ते ऊंच भगवान उनकी तुमको मत मिलती है। दूसरी तो कोई बस्तुहै नहीं। एक को ही कहा जाता है सर्वशक्तिवान। वर्ल्ड आलमाईटी अथार्टी। अथार्टी का अर्थ भी खुद समझाते हैं। यह मनुष्य नहीं समझते। क्योंकि वह सभी है तमोप्रधान दुनिया। उनको ही कहा जाता है कलि ऐसे नहीं कि कोई के लिये कलियुग है, कोई के लिये सतयुग हैं, कोई के लिये त्रेता है कोई के लिये द्वापर है। जब कि अभी है नर्क। तो कोई भी मनुष्य ऐसे कह नहीं सकता कि हमारे लिये स्वर्ग है क्योंकि हमारे पास धन है तो हमारे लिये स्वर्ग है। यहहो नहीं सकता। यह तो बना बनाया खेल है। सतयुग पास्ट हो गया है। इस समय तो हो भी नहीं सकता। यह सभी समझ की बात है। बाप बैठ सभी बातें समझाते हैं। सतयुग में इनका राज्य था। भारत उस समयसतयुगी कहलाता था। अभी जरूर कलियुग कहलावेगा। सतयुग में थे तो उस स्वर्ग कहा जाता था। ऐसे नहीं कि नर्क को ही स्वर्ग कहेंगे। मनुष्यों की तो अपनी2 मत हैं। धन का सुख है अपने को स्वर्ग में समझते हैं। मेरे पास तो बहुत सम्पति है इसलिये मैं स्वर्ग में हूं। परन्तु विवेक कहता है नहीं। यह तो है ही नर्कमहल किसके पास। 0-20 हजार, लाख दो हो। परन्तु यह है ही रोगी दुनिया। सतयुग कहेंगे निरोगी दुनिया। दुनिया यही हैं। सतयुग में इनको निरोगी दुनिया कलियुग में भोगी दुनिया कहा जाता वहां है ही योगी दुनिया क्योंकि विकार का भोग विलास नहीं होता। तो यह स्कूल है। इसमें शक्ति की बा नहीं। टीचर शक्ति दिखलाते हैं क्या। एमआबजेक्टरहता है हमफलाना बनेंगे। तुमइस पढ़ाई से मनुष्य से देवता हो। ऐसे नहीं कि कोई जादू वा छू मंत्र वा रिधी सिधी की बात है। यह तो स्कूल हैं। स्कूल में रिधी सिधी की बात होती है क्या। पढ़कर कोई डाक्टर कोई बेरीस्टर बनता है। यह ल0ना0 भी मनुष्य थे। परन्तु पवित्र थे। इस लिये इन्हों कोदेवी देवता कहा जाता है। पवित्र जरूर बनना है। यह है ही पतित पुरानी दुनिया। मनुष्य तो समझते हैं पुरानी दुनिया होने में लाखोंवर्ष पड़े हैं। कलियुग के बाद ही सतयुग आवेगा। अभी तुम हो युग पर। इस संगम का भी किसको पता नहीं हैं। समझते भी हैं सतयुग होता है कलियुग होता है परन्तु सतयुग लाखों वर्ष दे देते हैं। यह सभी बातें बाप ही आकर समझाते हैं। उनको कहा जाता है सुप्रीम सोल। आत्माओं को बाबा ही कहेंगे। दूसरा कोई का नाम नहीं होता। बाबा का नाम है शिव। शिव के मंदिर में भी जाते हैं। शिव को निराकार ही कहा जाता। उनका मनुष्य शरीर है नहीं। तुम आत्मायें यहां पार्ट बजाने आते हो। तुम तुमको मनुष्य शरीर मिलता है। वह शिव हैतुम हो सालीग्राम। शिव और शालीग्राम की पूजा भी होती क्योंकि चैतन्य होकर गये हैं। कुछ कर के गये हैं तबउनका नामोच्चार गाया जाता है। अथवा पूजे जाते हैं। आगे जन्म कातो किसको पता नहीं हैं। इस जन्म में गायन करते हैं। देवी देवताओं को पूजते हैं। इस जन्म में तो बहुत लीडर्स भी बन गये हैं। जो अच्छे2 साधु सन्त आदि होकर गये हैं उनकी स्टेम्पस भी बनाते हैं। नामोच्चार के लिये स्टेम्पस बनाते हैं। यहां ही होकर गये हैं। उनका नाम गाते हैं। फिर सभी से बड़ा नाम किसका गाया जायें। सबसे बड़े ते बड़ा कौन है? ऊंच ते ऊंच एक भगवान ही हैं। वह है निराकार। उनकी महिमा बिल्कुल

(3) अलग है। देवताओं की अलग है। मनुष्य को देवता नहीं कह सकते। देवताओं को फिर मनुष्य नहीं कहाजा सकता। देवताओं में गुण थे। यह (ल०ना०) हो गये हैं ना। पवित्र थे। विश्व के मालिक थे। इन्हों कीपूजा भी करते हैं। क्योंकि पवित्र पूज्यहैं। अपवित्र को पूज्यनहीं कहेंगे। अपवित्र सदैव पवित्रों को पूजते हैं। कन्या पवित्र है तोपूजी जाती हैं। पतित बनती है तोसभी को पांव परना पड़ता हैं। इस समय सभी हैं पतित। सतयुग में सभी पावन थे। वह है ही पवित्र दुनिया। कलियुग है पतित दुनिया। तब हीउनको बुलाते हैं। जब पवित्र हैं तो पतितपावन को नहीं बुलाते हैं। बाप खुद कहते हैं मुझे सुख में कोई भी याद नहीं करते हैं। भारत की ही बात है ना। इस समय पतित बना है। भारत ही पावन था। पावन देवताओं को देखना है तो जाकर मंदिरों में देखो। देवतायें सभी हैं पावन। उनमें जो मुख्य2 हैड्स हैं उन्हों को मंदिरों में दिखाते हैं। इनल०ना० के राज्य में सभी पावन थे। यथा राजारानी .... इस समय यथाराजा रानी पति तथा प्रजा। सभी पुकारते रहते हैं हे पतित पावन आओ। कृष्णको तोसन्यासी लोग मानते ही नहीं। सन्यासी कृष्ण को कब भगवान वा ब्रह्म नहीं कहेंगे। वह तो समझते हैं भगवान निराकार है। उनका चित्र भी निराकार नमूने पूजा जाता हैं। उनका स्प्युरेट नाम शिव है। तुम आत्मा आत्मायें जबयहां आकर शरीर धारण करते हो तब तुम्हारा नाम रखा जाता हैं। आत्मा तो आत्मा ही हैं। आत्मा को बला कैसे सकेंगे। इसलिये शरीरपर नाम रखा जाता हैं। आत्मा अविनाशी हैं। यह जीव (शरीर) विनाशी है। आत्मा एक शरीर छोड़ जाकर दूसरा लेती हैं। 84 जन्म तो चाहिएना। 84 लाख नहीं होती। तो बाप समझाते हैं यह दुनिया सतयुग में नई दुनिया थी। राइटियस थे। यही फिर अनराईटियस हो जाती हैं। वह है सच्च खण्ड। सभी सच्च बोलने वाले होते हैं। भारत को सच्च खण्ड कहाजाता हैं। झूठ खण्ड भी कहाजाता हैं। झूठ खण्ड से फिर सच्च खण्ड बनना हैं। सच्चा बाप ही आकर सच्च खण्ड स्थापन करते हैं। उनको सच्चा पातशाह सत्य कहा जाता है। यह है ही झूठ खण्ड। मनुष्य जो बोलते हैं वह बिल्कुल झूठ। पूज्य परमपिता परमात्मा कहां हैं। वह देंगे वह तो सर्वव्यापी हैं। बाप कहते हैं यह सभी है नानसेन्स बुध। सेन्सीबुल बुध हैं यह देवतायें। जो होकर गये हैं उन्हों को नानसेन्सीबुल मनुष्य पूजते हैं। अर्थात अकलमन्द और बेवकुफ हैं। अकलमन्द कौन बनाते हैं। फिर बेवकुफ कौन बनाते हैं। यह भी बाप बैठ बताते हैं। अकल मन्द सर्व गुण सम्पन्न ... बनाने वाला है बाप। वह खुद आकर अपना परिचय देते हैं। जैसे तुम आत्मा हो, फिर यहांशरीर में प्रवेश कर पार्ट बजाते हो। मैं ही एक ही बार इनमें प्रवेश करता हूं। तुम बच्चे समझते हो वह है ही एक। उनको ही सर्वशक्तिवान कहा जाता हैं। दूसरा कोई मनुष्य नहीं जिसकोसर्वशक्तिवान कहें। ल०ना० को भी नहीं कह सकते। क्योंकि उन्हों को भी शक्ति देने वाला कोई है। पतित मनुष्य में शक्ति हो न सके। आत्मा में जो शक्ति रहती हैं वह आस्ते2 फिर डिग्रेड हो जाती है। अर्थात आत्मा जो सतोप्रधानशक्तिवान थी वह तमोप्रधान शक्ति हो जाती हैं। जैसे मोटर का तेल खलास होनेसे मोटर खड़ी हो जाती है। यह बैटरीघड़ी2 नहीं खपती हैं। इनको पूरा टाईम मिला हुआ है। कलियुग अन्त में बैटरी ठंढी हो जाती हैं। जो पहले सतोपधान विश्व के मालिक थे वह तमोप्रधान बन जाने कारण ताकत कम हो जाती हैं। शक्ति रहती ही नहीं। वर्थ नाट अपेनी हो जाते हैं। भारत में देवीदेवता धर्म था तो वर्थ पाउन्ड थे। रीलिजन ईज माईट कहा जाता है ना। आदि सनातन देवी देवताधर्म में ताकत है। विश्व के मालिक थे। क्या ताकत था। कोई लड़ने आदि की ताकत नहीं थी। ताकत मिलती है सर्वशक्तिवान बाप से। ताकत क्या चीज़ है बाप बैठसमझाते हैं मीठे2 बच्चों तुम्हारी आत्मा सतोप्रधान थी। अभी तमोप्रधान हैं। जन्म लेते2 अभी तमोप्रधान होते गये हो। अभी तो ताकत है विश्व के मालिक बदली विश्व के गुलाम बन गये हो। बाप समझाते हैं यह 5विकार रूपी रावण तुम्हारी ताकत छीन लेती हैं। इसलिये भारतवासी कंगाल बन पड़े हैं। ऐसे नहीं समझो सन्यासी आदि में बहुत ताकत हैं। वह ताकत नहीं हैं। यह रूहानी ताकत है जो सर्वशक्तिवान बाप से योग लगाने से मिलती हैं। सायंस और सायलेन्स की इस समय जैसे किलड़ाई हैं। तुम सायलेंन्स में जाते हो। उसका तुमको बल मिल रहा है। सायलेन्स का बल लेकर सायलेन्स दुनिया में चले जावेंगे। बाप को याद कर अपने को

शरीर से डिटेच कर देते हैं। भक्तिमार्ग में भगवान पास जाने लिये तुमने बहुत ही माथा मारा है परन्तु सर्वव्यापी पत्थर पितर में कह दिया है। तो कोई रास्ता मिलता ही नहीं। तुम तमोप्रधान बन गये हो। यह तो पढ़ाई है। पढ़ाई को शक्ति नहीं कहेंगे। बाप कहते हैं पहले तो पवित्र बनो और सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है उनको नालेज समझो। नालेजफुल तो बाप ही है। इसमें शक्ति की बात ही नहीं। नालेज ज्ञान को कहा जाता है। बच्चों को यह पता नहीं है कि सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। तुम एक्टर्स एक्टर्स पार्टधारी हो ना। यह बेहद का ड्रामा है। आगे मनुष्यों का नाटक चलता था इसमें अदली बदली हो सकते थे। अभी तो फिर बायसकोप बनी है। बाप को भी बायसकोप का मिसाल दे समझाना सहज होता है। वह छोटा बायसकोप यह है बड़ा। नाटक में एक्टर्स आदि को चेंज कर सकते हैं। यह तो अनादि ड्रामा है। एक बार जो शूट हुआ वह फिर बदल नहीं सकता। बिमारी सिमारी आदि जो कुछ है सभी रिपीट होगा। यह सारी दुनिया बेहद का बायसकोप है। शक्ति की तो बात ही नहीं। अम्बा को शक्ति कहते हैं। परन्तु फिर भी नाम तो है ना। उनको अम्बा क्यों कहते हैं, क्या कर के गई है। अभी तुम समझते हो लक्ष्मी को सतयुग में समझते हैं। अम्बा कब होकर गई है यह किसको भी पता नहीं है नालेज ही नहीं। इसलिये कहा जाता है अन्धश्रधा की पूजारी। जिसकी पूजा करते हैं उनकी आक्युपेशन को जानना चाहिए ना। कितना क्लाईडपैथ है। आज लक्ष्मी को पूजेंगे कल अम्बा को पूजेंगे। परसों काली को। चण्डीका देवी का भी मेला लगता है। अभी तुम समझते हो ऊंच ते ऊंच है अम्बा। और लक्ष्मी। अम्बा ही फिर लक्ष्मी बनी है। यह भी तुम अभी समझते हो। तुम नालेजफुल भी बनते हो। और तुमको पवित्रता भी सिखलाते हैं। वह पवित्रता आधा कल्प चलती है। फिर बाप ही आकर पवित्रता का रास्ता बताते हैं। उनको बुलाते भी हैं इसलिये कि आकर रास्ता बताओ और गाईड भी बनो। वह है परमपिता। परम आत्मा। सुप्रीम सोल। सुप्री के पढ़ाने से आत्मा सुप्रीम बनती है। सुप्रीम प्योर को कहा जाता है। अभी तुम पतित हो। बापदादा स्वर पावन है ना। फर्क है ना। वह स्वर पावन हो जब आये तब सभी को स्वर्ग के और सिखलाते। इसमें खुद आकर बतलाते हैं कि मैं तुम्हारा बाप हूं। मुझे रथ तो जरूर चाहिए। नहीं तो आत्मा बदले कैसे। रथ भी मशहूर है। गाते हैं भाग्यशाली रथ। तो भाग्यशाली रथ है मनुष्य का न कि कोई घोड़ेगाड़ी की बात है। मनुष्य का ही रथ चाहिए जो मनुष्यों को बैठ समझावे उन्होंने फिर घोड़ेगाड़ी बैठ दिखाई है। भाग्यशाली मनुष्य को कहा जाता है। यहां कोई2 जानवरों की भी बहुत अच्छी सेवा होती है। जो मनुष्य की भी नहीं होती। कुत्ते को कितना प्यार करते हैं। घोड़े को गाय को भी प्यार करते हैं। कुत्तों को इन्जेक्शन लगते हैं सबसे जास्ती प्यारा कुत्ता कौन सा है। कुत्ते को चुमते भी हैं। बड़ी खुशी होती है। यह सभी छी छी काम सतयुग में नहीं होते। ल0ना0 कुत्ते पालते होंगे या। इसलिये कहा जाता है यहां तो मनुष्य जानवरों से भी बदतर है। कहां पति को चुमना कहां कुत्ते को। तमोप्रधान बुधि है ना। इसलिये सतोप्रधान बनाने वाले बाप को बुलाते हैं। अभी तुम बच्चे जानते हो हम सभी तमोप्रधान बुधि थे। अभी सतोप्रधान बन ऐसा बनना है। वहां तो घोड़े आदि ऐसे नहीं होते जो मनुष्य ऐसे उनकी सेवा करें। तो बाप बैठ समझाते हैं तुम्हारा हालत देखो क्या हो गई है। रावण ने यह हालत कर दी है। यह तुम्हारा दुश्मन है। परन्तु तुमको पता नहीं है कि इस दुश्मन का जन्म कब होता है। शिव के जन्म का भी पता नहीं है। तो रावण के जन्म का भी पता नहीं है। बाप बतलाते हैं त्रेता के अन्त और द्वापर के आदि में रावण आते हैं। उनको दस सीस क्यों दिये हैं। हर वर्ष क्यों जलाते हैं यह भी कोई नहीं जानते। अभी तुम मनुष्य से देवता बनने लिये पढ़ते हो। जो पढ़ते नहीं वह देवता बन नहीं सकते। फिर वह आवेंगे तब जब रावणराज्य शुरू होगा। बुलाते भी हैं हे पतित पावन आकर हमको पावन बनाओ। पतितों पावन दुनिया में आ न सके। अभी तुम जानते हो हम ही देवी देवता धर्म के थे। फिर सेपलिंग लग रही है। बाप कहते हैं मैं हर 5000 वर्ष बाद आकर तुमको पढ़ाता हूं। इस समय सारी सृष्टि का झाड़ पुराना हो गया है। नया जब था तो एक ही धर्म था। फिर दो कला डिग्रेड होते हैं। पुनर्जन्म होता है ना। बाप 84 का भी हिसाब बताते हैं। तुम नहीं जानते हो। बाप नालेजफुल है। बच्चों को गुडमौर्निंग

*-:*********-:*